भजन

तर्ज– जब जब बहार आई

माया से तंग आकर,कर बैठे गर शिकायत
धनी आप माफ करना,पिया आप माफ करना

1– चाहते तो हम नहीं हैं माया में दिल लगाना
रहे दिल में प्यार तेरा लब पे यहीं तराना
लाचार हो दुखों से,पिया तुम ही हो ठिकाना

2– सेवा न की तुम्हारी और न ही कोई बंदगी
मोह माया में उलझ कर रह गई हमारी जिदंगी
न जागी न जगाया कोई कौल न निभाया

3– परदेस में है डेरा चंद रोज का हमारा
बेगानों के जहां में भला कैसे हो गुजारा
निसवत वोह अर्श वाली पल में भुला जो डाली

4– अंगना हैं हम तुम्हारी हमें आस भी तुम्हारी
जो दास्ताने गम है सुने कौन अब हमारी
माना गुनाह की मारी पर हैं तो हम तुम्हारी